11

पवित्र आत्मा और बपतिस्मा

''क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या यूनानी, क्या दास, क्या स्वतंत्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया'' (1 कुरिन्थियों 12:13)।

यूहन्ना 3:3-5 की चर्चा में ''यीशु ने बपतिस्मे के विषय में सिखाया'' पाठ नये जन्म में पवित्र आत्मा का कार्य में देखा गया था। अब हम बपतिस्मे के साथ पवित्र आत्मा के दान के सम्बन्ध पर अध्ययन करेंगे।

बपतिस्मे में जल और आत्मा से जन्म लिया जाता है (यूहन्ना 3:5)। मरकर पाप से छूटकर नया जीवन जीने के लिए आता है (रोमियों 6:4-7) और यीशु के गाड़े जाने और जी उठने में सहभागी होने के कारण (कुलुस्सियों 2:12, 13) उसे क्षमा किया जाता है (प्रेरितों 2:38)। प्रेरितों के काम में संसार भर में सुसमाचार फैलने के आरम्भ के साथ बपतिस्मे के काफ़ी उदाहरण दिए गए हैं (प्रेरितों 2:38-47; 8:12, 35-39; आदि)।

बपतिस्मा लेने वाला अपने विश्वास और मन से आज्ञाकारी होने के कारण (रोमियों 6:4, 17, 18; गलतियों 3:26, 27; कुलुस्सियों 2:12, 13) मसीह में नई सृष्टि (2 कुरिन्थियों 5:17; गलतियों 6:15) और परमेश्वर का बालक बन जाता है। यीशु में विश्वास करने के कारण उसके पाप धोए गए हैं, उसका नया जन्म हुआ है, वह परमेश्वर का बालक बन गया है और उसे पवित्र आत्मा दिया गया है। यूहन्ना ने लिखा है, ''उसने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे'' (यूहन्ना 7:39)। यह भी लिखा, ''और हम इन बातों के गवाह हैं, और पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है, जो उस की आज्ञा मानते हैं'' (प्रेरितों 5:32; तु. 1 थिस्सलुनीकियों 4:8)। पिन्तेकुस्त के दिन पतरस ने पहली बार सुसमाचार सुनने वालों से कहा था, ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (प्रेरितों 2:38)। पौलुस ने लिखा, ''और तुम जो पुत्र हो, इसलिए परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारता है, हमारे हृदय में भेजा है'' (गलतियों 4:6)।

''आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की संतान हैं'' (रोमियों 8:16)। वह हमारी आत्मा *की* गवाही नहीं देता कि हम परमेश्वर की संतान हैं, बल्कि वह हमारी आत्मा *से* मिलकर गवाही देता है कि हम परमेश्वर की संतान हैं, जिसका अर्थ यह है कि जब हम ''हे हमारे पिता'' कहते हैं तो वह हमारे साथ गवाही दे सकता है कि परमेश्वर सचमुच हमारा पिता है।

परमेश्वर की संतान को एक प्रतिज्ञा के रूप में कि उनका सम्बन्ध परमेश्वर से है, पवित्र आत्मा के दान की छाप की जाती है। पौलुस ने लिखा है, ''और जो हमें तुम्हारे साथ मसीह में दृढ़ करता है और जिसने हमें अभिषेक किया वही परमेश्वर है। जिसने हमें छाप भी कर दी है और बयाने में आत्मा को हमारे मनों में दिया'' (2 कुरिन्थियों 1:21, 22), और ''उसी में तुम पर भी जब तुम ने सत्य का वचन सुना, जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है, और जिस पर तुम ने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी। वह उसके मोल लिए हुओं के छुटकारे के लिए हमारी मीरास का बयाना है, कि उसकी महिमा की स्तुति हो'' (इफिसियों 1:13, 14)।

आत्मा परमेश्वर के पुत्रों पर यह छाप लगाने के लिए दिया जाता है कि वे उसके हैं (गलतियों 4:6), न कि उन्हें पुत्र बनाने के लिए। ''यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं'' (रोमियों 8:9)।

यह एक साधारण नियम बन जाता है कि संसार के खोए हुए लोगों को पवित्र आत्मा नहीं मिल सकता (यूहन्ना 14:17), बल्कि वह उन्हें दिया जाता है जो विश्वास करके आज्ञा मानते हैं अर्थात उनको जो परमेश्वर के पुत्र हैं।

पवित्र आत्मा का दान

''पवित्र आत्मा का दान'' जो परमेश्वर के पुत्रों को दिया जाता है आश्चर्यकर्म करने की आत्मा की चमत्कारी शक्ति का दान *नहीं,* बल्कि आत्मा का अन्तर्निवास है (1 कुरिन्थियों 6:19, 20; 2 तीमुथियुस 1:14)। आत्मा के अन्तर्निवास का दान मसीही व्यक्ति को मसीही जीवन जीने के लिए सामर्थ देता है (इफिसियों 3:16)। आत्मा के शक्ति के दान से इस दान को पाने वालों को चिह्न तथा अद्‌भुत कार्य करने की शक्ति मिली थी (इब्रानियों 2:3, 4)।

प्रेरितों 8:12–17 इस नियम का अपवाद नहीं है:

> ... जब प्रेरितों ने जो यरूशलेम में थे सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का वचन मान लिया है तो पतरस और यूहन्ना को उन के पास भेजा। और उन्होंने जाकर उन के लिए प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा पाएं। क्योंकि वह अब तक उन में से किसी पर न उतरा था, उन्होंने तो केवल प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया था। तब उन्होंने उन पर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र आत्मा पाया।

जब सामरिया के लोगों ने बपतिस्मा लिया था, तो उन्हें साधारण नियम के अनुसार परमेश्वर के बालकों के रूप में पवित्र आत्मा का अन्तर्निवास मिला था; उन्हें आत्मा की शक्ति उसी

समय नहीं मिल गई थी। बाद में, वह उन्हें उन पर प्रेरितों के हाथ रखने से दी गई थी (तु. प्रेरितों 19:5, 6)।

तीमुथियुस को पौलुस के हाथ रखने ''से'' या ''के द्वारा'' (*dia*, एक यूनानी उपसर्ग, जिसे सम्बन्ध कारक के साथ इस्तेमाल करने पर इसका अर्थ ''साधक का मध्यस्थ'' जिसके द्वारा कोई कार्य करता है) दान मिला था (2 तीमुथियुस 1:6)। बहुत अधिक सम्भावना है कि यह वही दान है जो प्राचीनों [प्रेसबिटरी] के हाथ रखने ''से'' (*meta*, एक अपसर्ग जिसका सम्बन्ध कारक के साथ अर्थ है, ''in accompaniment with'' होता है) मिला था (1 तीमुथियुस 4:14)। अच्छे कारण के लिए, पौलुस ने यह व्याख्या करने के लिए कि तीमुथियुस को यह दान कैसे मिला स्पष्टत: दो अलग-अलग उपसर्गों का इस्तेमाल किया है। यीशु ने पौलुस के हाथ रखने *के द्वारा* और प्राचीनों के हाथ रखने से तीमुथियुस को दान दिया था। पौलुस के हाथ वे माध्यम थे जिनके द्वारा दान दिया गया था और पौलुस के साथ-साथ प्राचीनों ने भी तीमुथियुस को दान का इस्तेमाल करने के लिए नियुक्त करने के लिए उस पर हाथ रखे थे।

अन्यजातियों से बनने वाले सबसे पहले मसीही

प्रेरितों 10 और 11 में हमें अन्यजातियों के सबसे पहले मन परिवर्तन में सामान्य नियम का एक अपवाद मिलता है। किसी बात को प्रमाणित करने के लिए बहुत से अपवाद होने ज़रूरी होते हैं। यीशु के आश्चर्यकर्मों में भी यही बात लागू होती थी। यदि उसने केवल ऐसे ही कार्य किए होते जिन्हें एक सामान्य व्यक्ति भी कर सकता, तो यह प्रमाणित नहीं हो सकता था कि वह परमेश्वर का पुत्र है। वे काम करके जिन्हें मनुष्य अपनी स्वाभाविक योग्यताओं के द्वारा नहीं कर सकता था अर्थात जो प्राकृतिक प्रक्रियाओं का अपवाद हैं, उसने अपने आपको परमेश्वर का पुत्र प्रमाणित किया है (यूहन्ना 20:30, 31; प्रेरितों 2:22)।

एक अपवाद से, परमेश्वर ने प्रमाणित किया कि वह उद्धार के लिए अन्यजातियों को ग्रहण कर लेगा और उन्हें इब्राहीम के वंशजों की तरह ही बना देगा जो कि एक ऐसी वास्तविकता थी जिसे स्वीकारना यहूदियों के लिए कठिन था। सामान्य ढंग से अर्थात बपतिस्मे के बाद प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र आत्मा की शक्ति देना यहूदी मसीहियों के लिए पर्याप्त प्रमाण नहीं था कि पापों से क्षमा पाकर भी अन्यजातियों को यहूदी मसीहियों की तरह मसीही समाज में वही दर्जा दिया जाए। परमेश्वर के अपवाद के बिना, अन्यजातियों में से आने वाले मसीहियों की स्वीकृति केवल प्रेरितों की मंजूरी से ही होनी थी। आरम्भ में यहूदियों को देने की तरह, अन्यजातियों को सीधे और बिना किसी मध्यस्थ के पवित्र आत्मा देकर परमेश्वर ने यह प्रमाणित कर दिया था कि अन्यजातियों का भी उद्धार किया जाता है और वे परमेश्वर की संतान की तरह ही हैं। ऐसा करके परमेश्वर यह प्रमाणित कर रहा था कि यह पतरस की नहीं बल्कि उसकी इच्छा थी।

यरूशलेम की कलीसिया द्वारा उठाई गई आपत्तियों का उत्तर देते हुए (प्रेरितों 11:3),

पतरस ने बड़े अधिकार से यह प्रश्न पूछा, ''तो मैं कौन था जो परमेश्वर को रोक सकता?'' (प्रेरितों 11:17)। बाद में उसने कहा, ''... कि परमेश्वर ने तुम में से मुझे चुन लिया, कि मेरे मुंह से अन्यजाति सुसमाचार का वचन सुनकर विश्वास करें। और मन के जांचने वाले परमेश्वर ने उन को भी हमारी नाईं पवित्र आत्मा देकर उनकी गवाही दी'' (प्रेरितों 15:7, 8)। परमेश्वर की पसन्द के कारण पतरस पूछने लगा, अन्यजातियों को पवित्र आत्मा पाते हुए देखकर, ''क्या कोई जल को रोक सकता है, कि ये बपतिस्मा न पाएं, जिन्होंने हमारी नाईं पवित्र आत्मा पाया है'' (प्रेरितों 10:47)। यह अपवाद पतरस के लिए पर्याप्त प्रमाण था कि यह मनुष्य को नहीं बल्कि परमेश्वर को अच्छा लगा था। अपने नियमों के अपवाद केवल परमेश्वर ही बना सकता है और ऐसे अपवाद से प्रमाणित होता है कि परमेश्वर कार्य कर सकता है।

पतरस की टिप्पणी के विषय में फ्रेड्रिक डेल ब्रूनर की टिप्पणी अवलोकन दोहराने योग्य है: ''वह ज़ोर देकर कहता है कि पवित्र आत्मा कुरनेलियुस के घराने पर वैसे ही उतरा 'जैसे आरम्भ में हम पर उतरा था' (आयत 15)। यह टिप्पणी महत्वपूर्ण है। पतरस यह नहीं कहता है कि पवित्र आत्मा कुरनेलियुस के घराने पर वैसे ही उतरा 'जैसे हमेशा सब पर उतरता है।' ''[1]

ब्रूनर ने बाद में ध्यान दिया, ''कलीसिया में जारी रहने वाली शब्दश: लें तो, पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्रेरितों के काम की शिक्षा नहीं है, क्योंकि यह वाक्यांश केवल शुरुआत के यहूदियों और अन्यजातियों के कलीसिया में शामिल होने के नाज़ुक मोड़ पर ही मिलता है।''[2]

प्रेरितों के काम की पुस्तक में पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की दो घटनाओं का वर्णन है, पहले पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरितों को और दूसरी अपने परिवार के साथ कुरनेलियुस और उसके अन्यजाति मित्रों की। पौलुस को भी पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला हो सकता है। उसने कहा कि उसे मनुष्यों ने नहीं बल्कि यीशु मसीह ने प्रेरित बनाया था (गलतियों 1:1)। यदि वह शक्ति जिसने उसे प्रेरित बनाया किसी मनुष्य के द्वारा आई होती, तो वह मनुष्यों द्वारा बनाया गया प्रेरित होता; उसने अपनी प्रेरिताई के किसी मनुष्य द्वारा मिलने से इन्कार किया, इसलिए हमें मानना पड़ेगा कि स्वयं यीशु ने उसे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देकर प्रेरिताई की शक्ति दी थी।

अन्यजातियों को परमेश्वर की संतान बनने से पहले और प्रेरितों के हाथ रखने के बिना पवित्र आत्मा की शक्ति मिली (जो कि सामान्य नियम का एक अपवाद है); परन्तु यह इस बात का संकेत नहीं है कि बपतिस्मा लेकर परमेश्वर की संतान बनने से पहले उनमें पवित्र आत्मा का अन्तर्निवास था। उन पर मन फिराने, बपतिस्मा लेने और पापों की क्षमा पाने के बाद पवित्र आत्मा का दान पाने का सामान्य सिद्धांत (प्रेरितों 2:38) लागू होगा, यहां तक कि वह प्रेरितों के काम की पुस्तक में मन परिवर्तन की किसी भी घटना के लिए होगा जिसमें पवित्र आत्मा के दान का उल्लेख नहीं है (प्रेरितों 8:35-39; 16:15, 33; 18:8)। पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की दो घटनाओं को छोड़कर, पवित्र आत्मा की शक्ति देने की बात प्रेरितों के हाथ रखने के द्वारा ही लिखी गई है (प्रेरितों 8:14-17; 19:5, 6; 2 तीमुथियुस 1:6)।

पवित्र आत्मा और मन परिवर्तन

प्रेरितों के काम की पुस्तक में पवित्र आत्मा को सीधे तौर पर पापी को बदलने के लिए कार्य करते नहीं बल्कि संदेशवाहक के द्वारा, जिसके पास उस समय लिखित वचन नहीं था, और उसे सच्चाई से अगुआई के लिए पवित्र आत्मा की आवश्यकता थी, कार्य करते बताया गया है (इफिसियों 3:3-5)। पाप के विषय में कायल करने का पवित्र आत्मा का काम (यूहन्ना 16:7-11) परमेश्वर के वचन के माध्यम से किया जाता था (यूहन्ना 6:63; प्रेरितों 2:37; 11:14; 24:25)। विश्वास का आधार सीधे तौर पर पवित्र आत्मा का प्रत्यक्ष कार्य नहीं बल्कि यह वचन ही है (यूहन्ना 17:20; प्रेरितों 17:11, 12; रोमियों 10:17)।

लोगों को पवित्र आत्मा परमेश्वर के पुत्र बनाने या उन्हें विश्वास और आज्ञाकारिता की ओर ले जाने के लिए नहीं दिया गया था। वह उन्हें दिया गया था जो परमेश्वर के पुत्र हैं (गलतियों 4:6) जो परमेश्वर के वचन के द्वारा जन्मे थे (1 पतरस 1:23), जिन्होंने विश्वास किया था (यूहन्ना 7:39) और जो आज्ञाकारी थे (प्रेरितों 5:32)।

कई लोगों ने दावा किया है कि पवित्र आत्मा को किसी पापी का हृदय खोलने के लिए आना चाहिए ताकि वह वचन को ग्रहण कर सके। अन्यजातियों में से सबसे पहले मसीही बनने वालों का यह दावा स्पष्ट तौर पर गलत साबित होता है। उनके हृदय आत्मा के आने से पहले ही खुले हुए थे, क्योंकि उन्होंने पतरस से कहा था, ''... अब हम सब यहां परमेश्वर के साम्हने हैं, ताकि जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से कहा है उसे सुनें'' (प्रेरितों 10:33)। आत्मा के सेवक के रूप में वचन से किसी का मन खुल सकता है; परन्तु, अपने हृदय में वचन को अनुमति देने की जिम्मेदारी मनुष्य की अपनी है (लूका 8:15)। पवित्र आत्मा ने संदेश देने वाले को संदेश तो दिया परन्तु खोए हुए लोगों के मनों में सीधे तौर पर उन्हें विश्वास दिलाने के लिए कार्य नहीं किया। विश्वास पवित्र आत्मा के प्रत्यक्ष कार्य के बजाय संदेश सुनकर आता है (रोमियों 10:17)। संसार पवित्र आत्मा को ग्रहण नहीं करता (यूहन्ना 14:17), बल्कि वह उनके पास ही आता है जो विश्वास करते हैं (यूहन्ना 7:39) और आज्ञा मानते हैं (प्रेरितों 5:32) और, परमेश्वर की संतान हैं (गलतियों 4:6)।

बाइबल में कहीं भी भावुक अनुभवों से पवित्र आत्मा के कार्य में समानता नहीं की गई है। पवित्र आत्मा के काम के प्रति ऐसी सोच की समस्या यह है कि यह लोगों की चंचल भावनाओं पर आधारित है (यिर्मयाह 17:9) जो कि अविश्वसनीय और भरोसे के योग्य नहीं है (नीतिवचन 28:26)।

कई लोगों ने बपतिस्मे की अनिवार्यता को कम बताया है क्योंकि उन्हें बपतिस्मा लेते समय कोई अलग अहसास नहीं हुआ जबकि बपतिस्मा न लेने वालों को बपतिस्मे के बिना ही लगा कि उनका उद्धार हो गया है। बपतिस्मा किसी प्रकार की कंपन का नहीं बल्कि आनन्द का कारण बनता है (प्रेरितों 8:39; 16:33, 34)। यह आनन्द यीशु में उस विश्वास से आता है कि उसके पाप क्षमा हो गए हैं।

भावनाओं और बपतिस्मे की तुलना शादी के समारोह से की जानी चाहिए। समारोह के पहले, दौरान या बाद की भावनाएं शादी के बन्धन को नहीं बांधती। केवल शादी ही दूल्हे

और दुल्हन की भावनाओं को एक दूसरे के प्रति बदल सकती है, बेशक यही उनके आनन्द का कारण हो सकती है। विवाह की शर्तों को पूरा करने से ही शादी वैध बनती है न कि विशेष प्रकार की भावनाएं रखने से।

ऐसे ही, बपतिस्मे से आनन्द मिलता है, परन्तु बाइबल में कहीं भी यह *नहीं* लिखा गया है कि पवित्र आत्मा किसी को उद्धार की अनुभूति करने का अहसास दिलाता है। उद्धार हृदय से (रोमियों 6:17, 18) आज्ञा मानने का परिणाम है (इब्रानियों 5:9), न कि मन पर पवित्र आत्मा के प्रत्यक्ष कार्य का।

सारांश

पवित्र आत्मा उन्हें दिया जाता है जो विश्वासी हों और आज्ञा मानते हैं अर्थात जो परमेश्वर की संतान बन चुके हैं। वह खोए हुए लोगों को परमेश्वर की संतान बनने के लिए नहीं दिया जाता। वह उस व्यक्ति के मन में प्रवेश करता है जिसके विश्वास ने उसे अपना जीवन सुधारने और पाप धोने के लिए बपतिस्मे में गाड़े जाकर यीशु के प्रति समर्पण के द्वारा मोड़ दिया है।

ईमानदार और शुद्ध मन वाले खोए हुए लोगों तक वचन के द्वारा ही पहुंचा जाता है (लूका 8:15), परन्तु जिनके हृदय बन्द हैं वे वचन को नकार देते हैं (मत्ती 13:15)। पवित्र आत्मा किसी पापी का हृदय खोलने के लिए सीधे तौर पर उसमें काम नहीं करता; इसके बजाय वह उस हृदय में प्रवेश करता है जो वचन के लिए खुला है और परमेश्वर के वचन की आज्ञा मानकर शुद्ध हो चुका है (1 पतरस 1:22; प्रेरितों 2:38)।

पाद टिप्पणियां

[1]फ्रैड्रिक डेल ब्रूनर, *ए थियोलोजी ऑफ़ द होली स्पिरिट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशि. Wm. B. ईश्डमैन्स पब्लिशिंग कं., 1970),194. [2]वहीं, 195.